55. संविधान–शिल्पी : डॉ. अम्बेडकर (डॉ. रमेश कुमार टण्डन) 150
56. जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन (डॉ. गणेश लाल जैन, कमलेश कुमार बैरागी) 153
57. नयी कविता का स्वरूप (डॉ. रविशंकर पटेल) 156
58. संगीत और चित्रकला के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा के गीत (डॉ. इला द्विवेदी) 159
59. मन्नू भण्डारी का लेखन (डॉ. गीता तिवारी) 162
60. डॉ. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में मूल्य – बोध (डॉ. मंजू देवी मिश्रा) 164
61. यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक मूल्य (डॉ. सनकादिक लाल मिश्र) 166
62. कबीर की सार्थकता – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में (डॉ. रेखा) 168
63. भीली लोकोक्तियों का अनुशीलन (डॉ. मीरा जामोद) 170
64. संजा का ऐतिहासिक पक्ष (डॉ. मेघा निशान्त शर्मा) 172
65. डिण्डौरी जिले की जनजातीय निवासियों के संस्कारों का अध्ययन (जन्म, विवाह, एवं मृत्यु संस्कार के विशेष संदर्भ में) (डॉ. अर्चना जायसवाल) 174

(English Literature / अंग्रेजी साहित्य)

66. Importance Of The Holy River Narmada In The Development Of Folk Literature Of Madhya Pradesh (Sehba Jafri) 177
67. Woman As A Scapegoat In Vijay Tendulkar's Silence ! The Court Is In Session (Dr. Swati Chandorkar) 180

(Drawing & Design / चित्रकला)

68. रवींद्रनाथ टैगोर और चित्रात्मक रूप संपदा (डॉ. शालिनी रानी) 182
69. नमदा हस्तशिल्प : टोंक के विशेष संदर्भ में (शर्मिला गुर्जर, प्रो.हिमाद्री घोष) 186
70. कलाकार विनय शर्मा एक साक्षात्कार (अमिता देवी) 189

(Physical Education / शारीरिक शिक्षा)

71. A Study Of Impact Of Forearm Length On Performance Of Basketball Players (Dr. Ashok Saha, Gaurang Nare, Dr. Jogendra Singh) 191
72. Nutrition For Adolescent Cricket Players - Basic And During Match (Dr. B. K. Choudhary, Gaurav Sharma) 193
73. Effect Of Sports Specific Endurance Circuit Training On Sprinting Performance And Leg Explosive Power Of Inter College Male Basketball Players During Competitive (Dr. Jogendra Singh, Manoj Kumar Singh) 196

संविधान-शिल्पी : डॉ. अम्बेडकर

डॉ. रमेश कुमार टण्डन *

शोध सारांश – डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलित वर्ग के नेता थे। वे उच्च शिक्षा प्राप्त थे। उन्हें पूरे संसार के कानून का अच्छा ज्ञान था। वे देश-सेवक, लोक-सेवक, राष्ट्रभक्त और दलितों के भगवान थे। वे संसार के एक महान पुरूष थे। उनका अभाव सम्पूर्ण देश को हमेशा खलता रहेगा। उन्होंने युग को एक नई चेतना दी और सभी को एक डोर में बाँधने की पूरी-पूरी कोशिश की। संसार उनका सदा आभारी रहेगा। वह उनसे हमेशा प्रेरणा लेता रहेगा। जब तक यह संसार रहेगा तब तक लोग भीमराव अम्बेडकर को याद करते रहेंगे। भारतीय इतिहास में उनका नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जा चुका है।'' उपरोक्त कथन आबिद रिजवी के हैं जिसका उल्लेख वे अपनी किताब 'दलितों के मसिहा', गरीबों के उद्धारक डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जीवन-गाथा ''डॉ. भीमराव अम्बेडकर'' में करते हैं। मुख्य पृष्ठ पर रिजवी जी नीचे पुन: लिखते हैं- ''जिसने जमीनी लड़ाई से अपना जीवन आरम्भ करके देश के करोड़ों दलितों के अधिकारों को कानूनी शस्त्र से लैस किया।''

प्रस्तावना – गुलाम भारत में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल सन् 1891 ई. को महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के मऊ नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता सूबेदार मेजर रामजी राव मालोजी अम्बेडकर थे, एवं माता जी भीमा बाई थीं। ये चौदहवीं संतान व जीवित पाँचवीं संतान के रूप जन्म लिए थे। आनन्द राव, बसंत राव, मन्जुला व तुलसी, ये चारों इनके अबाज व अबाजा थे। महाराष्ट्रीयन परम्परा के अनुसार ''भीम सकपाल'' के रूप में इनका नामकरण किया गया। कुछ दिन बाद गाँव की दूनिया छोड़कर वे सतारा शहर की दूनिया में आ गए। महार जाति होने के कारण इन्हें अछूत समझा जाता था, जिसके चलते भीम सकपाल स्कूल के दरवाजे के बाहर स्वयं की टाट बिछाकर बैठते। एक दिन, बीमारी के कारण उसकी माँ चल बसी, यहाँ भी इनका अछूत होना कारण बना। आगे की पढ़ाई के लिए (एल फिस्टन हाई स्कूल में भर्ती के लिए) पीतल की परात को सेठ के पास पचास रूपये में गिरवी रखना पड़ा। इस स्कूल में भी छुआछूत की एक घटना से आहत होकर, वह अपनी दीदी के पास मुम्बई चला गया। महार जाति के नाम पर चाय की दूकान से उसे धक्का दिया गया। नाई ने भी उसे धकेल दिया था। ऐसी अनेक घटनाएँ उनके जीवन में घटित हुईं, जिससे उनका मनोबल उच्च शिक्षा प्राप्त करने के प्रति, घटने की बजाय, प्रबल होता गया। अपने एक ईसाई मित्र कैलुस्कर के कहने पर भीमराव, बड़ौदा नरेश महाराज गायकवाड़ के पास गए, बड़ौदा नरेश ने कॉलेज प्रवेश और किताबों के लिए सौ रूपये दिए, साथ ही हर महीने पच्चीस रूपये छात्रवृत्ति भी स्वीकृत की। बी. ए. करने के बाद, पढ़ाई छोड़कर, परिवार चलाने के लिए उन्हें सेना में नौकरी करनी पड़ी। उसे बड़ौदा रियासत में लेफ्टीनेंट का पद मिला। भीखू बालंगकर की पुत्री रामाबाई से उनकी शादी हो गई। एक दिन उनके पिताजी बीमार हो गए। छुट्टी नहीं मिलने के कारण, उन्हें नौकरी से त्याग-पत्र देना पड़ा। अन्तत: वे अनाथ हो गए। पुन: एक बार बड़ौदा नरेश की सहायता से, उत्तीर्ण होने के बाद 10 साल तक बड़ौदा राज्य की सेवा करने की शर्त पर, वे उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका चले गये। डाक्टर ऑफ फिलासफी करने के बाद, डाक्टरेट करने के लिए वे लंदन चले गए, जहाँ वे थीसिस लिखना चाहते थे, बैरिस्टर बनकर भारत लौटना चाहते थे। परन्तु महाराज गायकवाड़ के द्वारा छात्रवृत्ति बंद करके बड़ौदा राज्य की सेवा के लिए वापस बुला लिए जाने के कारण, भीमराव को लंदन से भारत वापस आना पड़ा। उन्होंने 2000 रूपये के मासिक वेतन पर बड़ौदा रियासत के सैन्य सचिव के पद पर कार्य भार संभाला। इस पद पर भी, लोगों ने उन्हें चैन की सांसे नहीं लेने दीं, महार होने की वजह से कार्यालय का चपरासी पानी नहीं पिलाता था, फाईल को दूर से फेंककर देता था। फिर सराय में किराए का मकान लेकर रहने लगे, जब वहाँ के लोगों को उनकी जाति के बारे में पता चला, तो वे लोग भी मारने-पीटने को उतारू हो गए। अन्त में इस नौकरी को भी उन्हें छोड़ना पड़ा। बाद में बम्बई कॉलिज में अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति मिल गई। यहाँ भी अन्य प्रोफेसरों ने घड़ा से पानी पीने को लेकर अछूत कहकर उनका अपमान किया। इसी दौरान भीमराव पिता बन गए, पुत्र का नाम यशवंतराव रखा

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया, जिला-रायगढ़ (छ.ग.) भारत

गया। अम्बेडकर अपनी हालत से संतुष्ट नहीं थे। वे सोचने लगे– ''यह नौकरी छोड़ देंगे। लंदन जायेंगे और वहाँ जाकर पढ़ेंगे। कानून की अधूरी छोड़ी हुई पढ़ाई पूरी करेंगे और अपने सपने को साकार करेंगे, जो उन्होंने बहुत पहले देखा था, अछूतों और दलितों की सहायता का।'' मित्र नवल भटेना की सहायता से और कोल्हापुर के राजा द्वारा प्रेषित 5000 रू0 के चेक से उनके लंदन जाने की व्यवस्था हो गई। इस तरह इन्होंने कभी लंदन में, तो कभी बोन विश्वविद्यालय जर्मनी में अध्ययन पूरा किया।

कार्य एवं विचार – महार सम्मेलन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा, ''सबसे पहली बात तो यह कि हमारे विचार दृढ़ होने चाहिए। जब विचार दृढ़ होंगे तो हमें हमारे इरादे से कोई भी नहीं डिगा सकता। दूसरी बात यह कि हमारी बात में वजन होना चाहिए और तीसरी बात यह कि हमारी बात में आवाज, ताकत होनी जरूरी है। तभी तो हम अपनी आवाज सरकार तक पहुँचा सकते हैं उनसे अपना अधिकार मांग सकते हैं।'' पानी पीने के अधिकार को लेकर चौदार तालाब में भीमराव ने कहा– ''अधिकार दिये नहीं जाते और न ही कोई दिलाता है, अगर अधिकार चाहते हो तो उसके लिए लड़ो। अधिकार माँगने से कभी नहीं मिलता, बल्कि आगे बढ़कर छीनना पड़ता है।''

सामाजिक बदलाव के लिए और बेदखल किए व्यक्तियों के हित के लिए डॉ. अम्बेडकर ने बहिष्कृत हितकारिणी सभा का गठन किया। इसका उद्देश्य इस प्रकार थे–

1. शिक्षा प्रचार के लिए दलित समाज में छात्रावास खोलना तथा दूसरे योग्य उपायों और साधनों को अपनाना।
2. दलित समाज की शिकायतें प्राप्त करना और उन्हें शासन के सामने प्रस्तुत करना और इसके साथ पूरा इंसाफ करना।
3. औद्योगिक एवं कृषि स्कूलों द्वारा दलित समाज की आर्थिक स्थिति में सुधार करना तथा उसे उन्नत करना। उन्हें प्रगति के साधन प्रदान करना।
4. दलित पिछड़े वर्गों में सभ्य जीवन प्रसार के लिए पुस्तकालय, वाचनालय, सामाजिक सेवा– केन्द्र तथा अध्ययन केन्द्र स्थापित करना।

इस परिप्रेक्ष्य में जिला कुलाबा के दलितों को इन्होंने कहा था, ''हम जब तक तीन प्रकार के सुधार नहीं कर लेते, तब तक उन्नति की कल्पना नहीं कर सकते। अपने विचारों को हमें सुसंस्कृत करना चाहिए। हमारी वाणी में बल होना चाहिए। शरीर में ताकत और हौसला होना चाहिए। तभी हमें मान–सम्मान और अधिकार की प्राप्ति हो सकती है।''

पुन: उन्होंने दलितों, शोषितों के मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए ''डिप्रेस्ड क्लासिस शिक्षा संस्था'' की स्थापना की, जिससे सर्वहारा समाज के लोग शिक्षा प्राप्त करने की ओर उन्मुख हो सकें। उनके अन्दर शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो। इनकी मांग पर बम्बई प्रान्त के गवर्नर ने 8 अक्टूबर 1928 को दलित वर्गों के छात्रों हेतु पाँच छात्रावासों की स्थापना करवाई।

साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर डॉ. अम्बेडकर ने सर्वहारा समाज को सम्बोधित किया था, ''राजनैतिक शक्ति ही सभी रोगों का एकमात्र उपचार नहीं है। अछूतों की मुक्ति समाज सुधार में है। अपनी कुप्रवृत्तियाँ त्यागकर, अपने रहन–सहन में परिवर्तन लाओ, ताकि आप सरकार और मित्रता के पात्र बन सको। समाज के छोटे लोगों को सम्मान दोगे, तो वह आपका सम्मान करेंगे, तभी देश का सुधार सम्भव है। इस मौके पर साइमन ने कहा था– ''तुम एक सच्चे नेता हो अम्बेडकर। अछूतों को एक ऐसे नेता की सख्त जरूरत है जो उनका उद्धार कर सके, उन्हें समाज में मान–सम्मान दिला सके।''

प्रथम गोलमेज सभा के बाद, बम्बई में, मणि भवन में गांधी जी से अम्बेडकर ने कहा, ''महात्मा जी, मैं आपका सम्मान करता हूँ, जो बीस लाख रूपये आपने अछूतों पर खर्च किए, वह रकम अगर उन्हें बाँट देते, तो उनका कुछ भला होता। भारत में आप छुआछूत नहीं मिटा पाए, मुझे इसका दुख है। मैंने तय कर लिया है कि दलितों को मानवता का अधिकार दिलाकर रहूँगा। उन्हें इस देश में मान–सम्मान दिलाकर ही साँस लूँगा। अब उन पर अत्याचार नहीं होने दूँगा।''

सेठ कीर ने रत्नागिरी में एक नये मन्दिर का निर्माण करवाया, जिसके उद्घाटन के लिए उन्होंने डॉ. अम्बेडकर को आमंत्रित किया। डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में मन्दिर–प्रवेश उनका अन्तिम उद्देश्य नहीं था, बल्कि सामाजिक व धार्मिक स्तर की समानता के लिए यह प्रश्न अवहेलना करने वाला भी नहीं था।

स्वतंत्र भारत में इन्हें कानून मंत्री बनाया गया। सर्वसम्मति से संविधान बनाने का कार्य सौंपा गया, संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष बनाए गए, जिसे इन्होंने पूरी लगन के साथ पूरा किया। सभी ने इनके इस कार्य की प्रशंसा की।

कानून मंत्री रहते हुए डा. अम्बेडकर ने हिन्दू कोड बिल बनाया था, जिसे तत्कालीन मंत्रिमण्डल ने कोई विचार नहीं किया। इससे अपमानित महसूस करते हुए इन्होंने कहा था, ''मैं मिट्टी का ढेला नहीं हूँ, जो पानी की धार से घुल जाये। मैं एक पहाड़ी के समान हूँ, जो पिघलती नहीं; अपितु नदियों के बहाव को बदल देती है.....मैंने अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ चार वर्ष तक काँग्रेस से सहयोग किया और पूर्ण निष्ठा सहित मैंने अपनी मातृभूमि की सेवा में लगा दिया। लेकिन इन बरसों के बीच, मैंने अपने आपको काँग्रेस में विलीन नहीं होने दिया। मैं उन लोगों के साथ सहयोग और सहायता के लिए सहर्ष तैयार हूँ, जो परिगणित जाति के लोगों की उन्नति के लिए अपने शब्दों, कार्यों तथा समर्थन के प्रति निष्ठावान हैं। मैं

उनके साथ कभी सहयोग नहीं करूँगा, जिनकी वाणी मीठी है, परन्तु जिनके इरादे व कार्य हम लोगों के हित के पक्ष में नहीं है।

इन्हें हिन्दू धर्म से नफरत हो गई और नागपुर आकर इन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

कुछ बीमारी की वजह से, अन्ततः, वे 5 दिसम्बर 1956 के दिन, 26, अलीपुर रोड, दिल्ली आवास पर अंतिम साँस लिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रिजवी, आबिद : व्यक्तित्व एवं विचार बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, मारूती प्रकाशन, दिल्ली रोड मेरठ 250002

****